आत्मनिवेदन

यह दूसरा खण्ड खुद्दाबन्ध (क्षुल्द्रकबन्ध) है । इसमें कर्मका बन्ध करनेवाले सब जीवोंकी मुख्यतासे कथन दृष्टिगोचर होता है । प्रथम अधिकारमे चौदह मार्गणाओंमेसे प्रत्येक मार्गणाकी प्राप्ति किस प्रकार होती है इसका ९१ सूत्रद्वारा विवेचन किया गया है । दूसरी प्ररुपणामें एक जीवकी अपेक्षा कालानुगमकी मीमांसा की गई है । इसमें कुल २१६ सूत्र हैं । तीसरी प्ररुपणामें एक जीवकी अपेक्षा अन्तरानुगमका विचार किया गया है । इसमें सब मिलाकर १५१ सूत्र हैं । चौथे अनुयोग द्वारका नाम भंगविचय हैं । इसमें २३ सूत्र है। पांचवे अधिकारको द्रव्यप्रमाणानुगम कहते हैं । यह १७१ सूत्रोंमें निबध्द हुआ है । छठा अधिकार क्षेत्रानुगम है। इसमें १२४ सूत्र हैं । सातवें अधिकारका नाम स्पर्शनांनुगम है। यह सर्वाधिक २७९ सूत्रोंमे समाप्त हुआ है । आठवा अधिकार नानाजीवोंकी अपेक्षा कालानुगम है । इसमें कुल ५५ सूत्र हैं। नौवें अधिकारका नाम नानाजीवोंकी अपेक्षा अन्तरानुगम है । यह ६८ सूत्रोंमें लिखा गया है। दसवें अधिकारको भागाभागानुगम कहते हैं । यह ८८ सूत्रों द्वारा निबध्द किया गया है । ग्यारवां अल्पबहुत्वानुगम है । यह २०६ सूत्रोंद्वारा लिपिबध्द हुआ है । इसकेआगे सबसे अन्तमें महादण्डकका संकलन किया गया है । यद्यपि इसमें अल्पबहुत्वानुगमकी प्ररुपणाही निबध्द है । परन्तु इसको भिन्न प्रकारसे होनेके कारण इसे महादण्डक कहा गया है । इस प्रकार क्षुल्द्रकबन्धकेअधिकारोंका यह संक्षिप्त विवेचन है ।

जब इस ग्रन्थका अनुवाद होकर कई विद्वानोंमें प्रकाशनके योग्य बनाया था तब ताड पत्रप्रतियोंके पाठ उपलब्ध नहीं थे । केवल किसी प्रकार बाहर आई हुई प्रतिसे लिपिबध्द की गई विविध प्रतियोंके आधार पर इसका मुद्रण किया गया था । अब ताडपत्रीसे प्रतियोंके जो पाठभेद हमारे सामने हैं उनको ध्यानमें रखकर जिस प्रतिको तैयार किया जा रहा है उसी आधारपर संशोधनके साथ यह प्रति प्रकाशनके लिये सोलापूर भेजनेका उपक्रम है । इस काममें बन्धु श्री. पं. नरेन्द्रकुमारजी भिसीकर का भरपूर सहयोग मिल रहा है । इसकी हमें प्रसन्नता है । अब यहां पर उन पाठभेदोंकी सूची दी जा रही है जिस आधारपर प्रस्तुत ग्रन्थ को तैयार किया गया है । वे इस प्रकार हैं -

फुलचन्द्रजी शास्त्री